डा0 बी0 आर0 ए0 राजकीय महिला स्ना0 महा0, फतेहपुर

05–07–2020

रिपोर्ट

''देखो अपना देश'' की श्रृंखला के अन्तर्गत आज ''आधुनिकता के दौर में भारतीय हस्तशिल्प की दिशा और दशा'' विषय पर **वेबिनार** का आयोजन

डा0 बी0 आर0 ए0 राजकीय महिला स्ना0 महा0, फतेहपुर के **एक भारत श्रेष्ठ भारत प्रकोष्ठ** के तत्वाधान में **''देखो अपना देश'' के अन्तर्गत वेबिनार की श्रृंखला के आयोजन** में आज **''आधुनिकता के दौर में भारतीय हस्तशिल्प की दिशा और दशा''** विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का शुभारम्भ सरस्वती वन्दना की प्रस्तुति सुश्री आंचल मिश्रा, महाविद्यालय छात्रा के द्वारा गीत प्रस्तुत करके माध्यम से की गयी।

महाविद्यालय प्राचार्य एवं पैटर्न डा0 अपर्णा मिश्रा के द्वारा मुख्य अतिथि डा0 अमित भारद्वाज, संयुक्त सचिव, उ0 शि0 उ0 प्र0 एवं विशिष्ट अतिथि डा0 शीला रानी खरे, पूर्व प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय तथा समस्त आगन्तुको का स्वागत करते हुये वेबिनार के आज के विषय पर चर्चा करते हुये कहा कि आधुनिकता के इस दौर में भी भारतीय हस्तशिल्प की दिशा और दशा **की** स्थिति अभी भी गुणवत्ता के आधार पर बहुत अद्वितीय है। यह हो सकता है कि बाजार की समुचित उपलब्धता न होने या फिर सही प्रकार की ब्रान्डिग न होने के कारण व्यापार के दृष्टिकोड स हाथ से निर्मित साम्राग्री की स्थिति आधुनिक मशीन निर्मित सामाग्री से थोडा कम हो सकती है। परन्तु अच्छा बाजार मिलने पर यह स्थिति बदल सकती है। मुख्यअतिथि डा0 अमित भारद्वाज, संयुक्त सचिव, उ0 शि0 उ0 प्र0 ने अपने संबोधन में वर्तमान कोविड–19 समस्या को देखते हुये हस्तशिल्प का महत्व अपने आप बढ जाता है। उन्होने कहा हुनर कभी बेकार नही जाता है और यह हुनर अगर हाथों का हो तो और भी अच्छा है। उन्होने कहा कि जिस देश में हुनर की इबादत होती है। वह देश स्वयं आत्म निर्भर हो जाता है। प्राकृतिक सामाग्री से निर्मित वस्तुओं पर कोविड–19 का विषाणु भी कम समय जीवित रहता है। उद्घाटन सत्र की कीनोट स्पीकर डा0 जुही शुक्ला विजुअल आर्टस विभाग, पी0एम0वी0 महाविद्यालय, प्रयागराज ने हस्तकला के अन्तर्गत पामलीफ, टेराकोटा, जूटक्राफ्ट, बांबूबास्केट रामपुर, जूट आर्टस, मधुबनी पेंटिंग, पटना कलम, ट्राईबल आर्टस, टेराकोटा ट्राय, बंगाल डलिया आदि के विषय में विस्तार से चर्चा की। सत्र की विशेष अतिथि डा0 शीला रानी खरे, पूर्व प्राचार्य ने भारतीय हस्तशिल्प की दशा और दिशा पर बात करते हुये कहा कि यह भारतीय संस्कृति के घ्वजवाहक है। ये अलग बात है कि उनकी आर्थिक स्थिति थोडी दयनीय है। इनकी इतनी प्रजातियां है कि चुनाव करना कठिन है। सत्र में डा0 नीतू मिश्रा गृहविज्ञान विभाग इलाहाबाद केन्द्रिय विश्वविद्यालय प्रयागराज ने अपने वीडियो पावर प्वाईन्ट प्रस्तुतीकरण के माघ्यम से हस्तशिल्प की दशा और दिशा पर विचार रखे। इस सत्र में डा0 उत्तम कुमार शुक्ला ने संक्षिप्त सार प्रस्तुत करते हुये सभी आगन्तुको को धन्यवाद दिया। वेबिनार के तकनीकी सत्र में प्रथम रिसोर्स परसन डा0 सुबर्ना सरकार कामर्स विभाग एच0एन0बी0 राजकीय महाविद्यालय नैनी प्रयागराज ने भारत में हस्तशिल्प की एक धनी परंपरा है। उन्होने बताया कि व्यापार के दृष्टि से अगरबत्ती 966 करोर, ज्वेलरी 1930 करोर, इम्ब्रोयडरी 3926

करोर एवं हैन्ड प्रिंट टेक्सटाईल 3483 करोर हो चुका है। इसकी ग्रोथ 20 प्रतिशत वार्षिक है। इस सत्र की द्वितीय वक्ता डा0 स्मिता पाल कामर्स विभाग एच0एन0बी0 राजकीय महाविद्यालय नैनी प्रयागराज ने भारतीय हस्तशिल्प की पेरेनियल ऊर्जा एवं एक्सपोर्ट विषय पर अपने सारगर्भित विचार रखे। इस सत्र में लक्ष्मीना भारती ने सम्मिलित सभी रिसोर्स परसन एवं आगन्तुको को धन्यवाद दिया। वेबिनार की इस श्रृंखला की रीपोर्ट डा0 रमेश बाबू, संयोजक ने प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस श्रृंखला में अभी तक 593 पंजीकरण हुये और भारतीय संस्कृति की विविधता के अनुसार समस्त भारत के सभी प्रदेशों से पंजीकरण सम्मिलित रहे। कई प्रदेशों के रिसोर्स परसन इस वेबिनार की श्रृंखला से जुडे। बेविनार की श्रृंखला की आर्गेनाईजिंग सेक्रेटरी डा0 प्रतिमा गुप्ता ने सभी बेविनार्स में सम्मिलित होने वाले अतिथियों, रिसोर्स परसनस एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया। आज के वेबिनार का संचालन डा0 प्रशान्त द्विवेदी ने किया। इस अवचर पर महाविद्यालय परिवार के समस्त प्राध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्राचार्य